एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# सरसों की उन्नत खेती कैसे करें

(*हरीश कुमार टांक, नितेश कुमार तंवर एवं जितेन्द्र कुमार मीणा)
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, एम.पी.यु.ए.टी. उदयपुर (राजस्थान)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: tankdrhkumar@gmail.com

सरसों की खेती मुख्य रूप से भारत के सभी क्षेत्रों में की जाती है। सरसों हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की एक प्रमुख तिलहन फसल है। सरसों की खेती की विशेषता यह है की यह सिंचित और बारानी, दोनों ही अवस्थाओं में उगाई जा सकती है। विश्व में यह सोयाबीन और पाम के तेल के बाद तीसरी सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण फसल है। सरसों के बीज और इसका तेल मुख्य तौर पर रसोई घर में काम आते है तथा सरसों के पत्ते सब्जी बनाने के काम आते हैं। सरसों में 35–40 प्रतिशत तेल होता है और अवशेष के रूप में खली प्राप्त होती है। सरसों का तेल रक्त में कोलस्ट्रॉल को नियंत्रण में रखता है। सरसों की खली दुधारू पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में सहायक है। खली को जैविक खाद में रूप में भी प्रयोग किया जाता है। सरसों उत्पादन की उन्नत तकनीक एवं नवीनतम प्रजातियों को अपनाकर सरसों के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

## सरसों उत्पादन की तकनीक

**उपयुक्त जलवायु:** भारत में सरसों की खेती शीत ऋतु में की जाती है। इस फसल को 18 से 25 सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है। सरसों की फसल के लिए फूल आते समय वर्षा, अधिक आर्द्रता एवं वायुमण्ड़ल में बादल छायें रहना अच्छा नही रहता है। अगर इस प्रकार का मौसम होता है, तो फसल पर माहू या चैपा के आने की अधिक संभावना हो जाती हैं।

**भूमि का चयन:** लेकिन बलुई दोमट मृदा सर्वाधिक उपयुक्त होती है। यह फसल हल्की क्षारीयता को सहन कर सकती है। लेकिन मृदा अम्लीय नही होनी चाहिए।

**खेत की तैयारी:** खेत की एक जुताई मिट्टी पलट हल से तथा 2–3 जुताइयां देसी हल (कल्टीवेटर) से करके पाटा लगाकर भुरभुरा बना लेना चाहिए।

**प्रजाति का चयन:** सरसों की अनेक उन्नत प्रजातियां हैं, जो अच्छा उत्पादन देती हैं जैसे– पूसा–सरसों आर एच 30, राज विजय सरसों–2, पूसा–सरसों 27, पूसा–सरसों 28, पूसा–बोल्ड, पूसा डबल जीरों सरसों–31, आदि।

**बीज उपचार:** बीज जनित रोगों से सुरक्षा के लिए 2.5 ग्राम थीरम या ट्राइकोडर्मा विरिडी/हारजिएनम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करके बुआई करें। मैटालाक्सिल 1.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज उपचार करने से कीट एव पर्ण तुलासिता रोग की प्रारम्भिक अवस्था में रोकथाम हो जाती है।

**बुआई का समय, बीज दर एवं विधि:** सरसों की बुआई का उपयुक्त समय अक्टूबर का द्वितीय पखवाड़ा है। सिंचित व असिंचित क्षेत्रों में बीज की मात्रा 5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर प्रयोग करें। बुआई मशीन द्वारा 4–5 सें.मी. गहरा कूंड़ों में 40×15 सें.मी. की दूरी पर बुआई करनी चाहिए।

**उर्वरक:** उर्वरकों का प्रयोग खेत की मृदा स्वास्थ्य परीक्षण की रिपोर्ट के आधार पर ही करना चाहिए। सरसों की खेती के लिए खेत की तैयारी के समय अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 7–12 टन की दर से मिट्टी में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए। नाइट्रोजन 90 कि.ग्रा., फॉस्फोरस 60 कि.ग्रा. एवं पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर का प्रयोग करना चाहिए। फॉस्फोरस का प्रयोग सिंगल सुपर फॉस्फेट के रूप में

अधिक लाभदायक होता है। सिंचित क्षेत्रों में नाइट्रोजन की आधी मात्रा व फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुआई के समय कूंड़ में बीज के साथ देना लाभदायक होता है। नाइट्रोजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई बाद प्रयोग करनी चाहिए।

**सिंचाई:** सरसों में मात्र दो सिंचाई की आवश्यकता होती है। पहली बुआई के 25–30 दिनों बाद (फूल आने के पूर्व) तथा दूसरी वर्षा न होने पर 65–70 दिनों के बाद (फली भरने की अवस्था पर) करें।

**निराई–गुड़ाई:** सरसों की खेती में खरपतवार की रोकथाम के लिए 15 दिनों के फासलो में 2–3 निराई–गुड़ाई करें। रसायन द्वारा खरपतवार नियंत्रण करने के लिए पेंडीमेथालिन 30 ई.सी. 3.3 लीटर प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के दो–तीन दिनों के अन्दर 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से खरपतवार नहीं उगते हैं।

**कीट एवं रोग नियंत्रण**

**सरसों के प्रमुख कीट:** सरसों की फसल को हानि पहुंचाने वाले कीटों में आरा मक्खी, चित्रित कीट, बालदार सूंडी, गोभी की तितली व माहूं प्रमुख हैं। माहूं का प्रकोप दिसंबर–जनवरी से लेकर मार्च तक बना रहता है।

**प्रमुख रोग:** पत्ती झुलसा रोग, सेफद कीट रोग, चूर्णिल आसिता रोग और पर्ण तुलासिता रोग।

**एकीकृत प्रबंधन:**

- संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। नाइट्रोजन की अधिक मात्रा एवं पोटाश की कमी होने पर माहूं से हानि की आशंका अधिक होती है।
- रोगजनक की मात्रा कम करने के लिए गर्मी के दिनों में गहरी जुताई, फसल चक्र को अपनाना, रोगग्रसित पौधों के अवशेषों को जलाना तथा खरपतवारों को नष्ट करना बहुत जरूरी है।
- अगेती बुवाई रोगों को रोकने में सहायक होती है।
- फसल की बुवाई के चौथे सप्ताह में सिंचाई करने से कीटों का प्रकोप कम हो जाता है।
- ट्राइकोग्रामा अंड परजीवी कीट 50,000 प्रति हैक्टर प्रयोग करने से शत्रु कीट नियंत्रण में सहायता मिलती है।
- झुलसा, सफेद कीट तथा पर्ण तुलासिता रोग की रोकथाम के लिए डाइथेन एम.–45 या बाविस्टीन या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत को 2 कि.ग्रा. मात्रा अथवा मेटालेक्सिल तथा मैन्कोजेब की 1.0 कि.ग्रा. दवा को 800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टर छिड़काव करना चाहिए।
- आरा मक्खी, बालदार सूंडी एवं गोभी की तितली की रोकथाम के लिए थायोमेंथोक्जाम डब्ल्यू.जी. 0. 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

**कटाई एवं गहाई:** जब 75 प्रतिशत फलियां सुनहरे रंग की हो जाएं, तो फसल की कटाई करके सुखाकर थ्रेसिंग कर लेनी चाहिए। बीज को सुखाकर 8 प्रतिशत नमी पर भंडारण करना चाहिए।

**उत्पादन:** सरसों की उपरोक्त उन्नत तकनीक द्वारा खेती करने पर असिंचित क्षेत्रो में 15 से 20 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रो में 20 से 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर दाने की उपज प्राप्त हो जाती है।